

ये मैं हूँ । पहले ही मेरी जिंदगी बड़ी हसीन थी ना जो अभी उसे और चार चांद लग गए । बस अभी 12 घंटे पहले मैं ठीक था , बस 1 घंटा होगया मेरे दिल के अंदर की सारी तीतलीया मर गयी और अब दिल की सारी हड्डीया टुट गई। आरोह सही केह रहा था ये सब हमारा ही फेहलाया हुआ सणीचर हैं, और हम उस सणीचर से ही दिल लागाये बैठे थे। पर मेरी कहाणी की शूरवात ये सायकील ट्यूब पंकचर हुए जैसे दिल के साथ नहीं होती है, मेरी कहाणी शुरु होती है पुणे के एक नगर से । यहा से होती है शूरवात , यहा के चप्पे चप्पे छान मारने के बाद आपको एक जगाह ऐसी ना मिलेगी जो हमे पता नहीं, यहा की गल्लीयो से

आज भी हम मोहताब है । मेरा नाम है रेयांश,
नाम मे भले ही उजाला हो, मगर मेरे दिल में
और नसीब में अकाल पडा हुआ, पढाई मे भले
ही विज्ञान के छात्र है मगर हरकते कला के छात्र
जैसी है। मुझे लिखना पसंद है ,हां लेखक नाही
हू मगर दिल की बाते कागजोंपर उतार देता हू।

अजतक किताबो में हम
सब बोहत सारी कहानिय पढते आते है । इस
दुनिया में सबकी कोई ना कोई कहाणी होती है,
मेरी भी एक कहाणी है ,में कूच अच्छा लिखना
चाहता था ,लेकीन मेंने सोचा नही था की मेरी
जिंदगी ही एक कहाणी बन जयेगी।

भाईसहाब, आप जब अकेले
पड जाते है ना तब आपको बोहत सारी चिजे

पता चलती है । उन्मे से एक यह है की लडकी और रॉकेट हमे कही भी ले जा सकती है।अपने लाईफ में रॉकेट नही था पर हा एक लडकी थी, अब लडकी की बात आयी ही है तो प्यार भी हुआ था उससे। मेरे लाईफ में प्यार नाम का चापटर तो था, लेकिन one-sided जैसे एक तर्फा । अब आप सोचते होंगे इसमे नया क्या है..? पर आपको मैं बता दू की एक तर्फा प्यार बस दिल में फुकी हुई एक सिगरेट है, कुछ महिनो में दिल से बुझ जाती है ,कहियोंको मिलती है, कही कही बस दिल में रखते है। पर जैसे ही आप आपकी प्रियतमा (हां प्रियतमा ; क्यूकी आप उस वक्त उसके साथ दिमाग में नजाने कहा घुम जाते है) ,हां तो मैं बोल रहा

था की जैसे ही आप आपकी प्रियतमा को अपने दिल की बात बताते हैं , उसपर उनका आपके दिल की बात ठुकराणा कायम है । ठुकराने के बाद हम उसे भूल जाते हैं और ये खेल कुछ दिन या महिनो तक चलता है । पर मेरी कहाणी में वही एक तरफा प्यार देड साल तक अभि भी जिंदा है।

SECRET HEAVEN

-भूषण माने

तो अब पिछे देड साल चालते हुए बात शुरु होती है 31 अगस्ट 2019 ।
निठ्ठले की तरह उस दिन भी मैं अपने फोन में मूह मरे अपना वक्त जाया कर रहा था । उस

ही क्षण मुझे एक लडकी की तस्वीर दिखाई दी ,वो ही थी पेहली मुलाकात और पलक झपकाए उस ही लडकी पर मेरी आंखे कुछ पल तखती रही । उस रोज, उस पल, उस क्षण ऐसा लगा की हमारी नगर की सारी भांग हमारे माथे में और बाप्पा का सारा जहर हमारे अखों में उतार आया हो । 17 साल पहले मेरे पापा मेरे पाठाई के लिये मुझे गाव से यहा ले आये पर, अब लगा हमारे नगर ने हमे आज अपनाया हो । ये हमारे नगर का पेहला तोहफा था हमको । तसविर में वो थी मगर आंखे हमारी भर आयी । मूछो का निशाण चेहरे पर नही अया था ,पर अचानक से लगा की जवान हो गये ,शादी करणे लायक ! किसी लडकी के प्यार में जिने लायक

और मरणे लायक । यहा खतम होती है पेहली मुलाकात ,सोचा था ये ही आखरी मुलाकात होगी, हम कभी मिले नही ,ना ही मुझे उसका पता था

और ना ही उसे मेरा, ना ही हमने एक दुसरे को देखा था ।और आगे क्या...? उंगलियों से रहा नही गया और मैंने उसे 1 मिनिट ना हो पर कमसे कम बात की । ये क्षण, ये पल आज भी मेरे लिये खास है।

कुछ दिन, कुछ पल बित जाणे के बाद

एक इत्तेफाक ही सही पर उसका 6 सितम्बर 2019 को जन्मदिन था । हो ना हो पर एक और बार बात करणे का एक मौका मिला ।

दिमाग में डमरु बजने लगा ! और फिरसे हमारी बात हुई ,पर इस बार बात कुछ दिन या कुछ पल के लिये नहीं थी ,बलकी मजे की बात ये है की हम उस दिन से ले कर आज तक बात करते है । हां बीच में बढे उतार चढाव वाले स्पीडब्रेकर आये मगर कोई गैर नहीं । तो उसी रोजना मुझे उसका नाम पता चला। नाम है आरोही । एक इत्तेफाक की बात मैं आपको बता दु की हम दोनो एक ही स्कूल मे पढते थे पर ना उसने मुझे देखा ना मेने उसे । ये 10-12 साल पास होकर एक दुसरे को ना देखणा और ना बाते करना बडा ही घायल कर देने वाला seen था । तो बात आगे बढते हम एक दुसरे से बाते करणे लगे ,हां पेहले कुछ 14-15 दिन

तो हमे एक दुसरे को जानने मे गए , फिर आगे अच्छे दोस्त भी बन गए । वो दोस्ती थी हमारी वो एक तरफ में और मेरा उसपर दिल था वो दुसरी तरफ ,मेने दोनो चिझोको कभी एक नही समझा क्योंकि प्यार तब होता है जब पेहले दोस्ती हो, हां मेरा दिल आया था उसपर मुलाकात से पेहले ही पर प्यार नाही था ,वो तो आगे होना बाकी था ।

अब रेलगाडी को थोडा आगे बढाते एक इततेफाक ही सही पर हम दोनो क्यो मिले.? 10 साल तो एक ही स्कूल में पढे पर दोनो अजतक क्यो मिले या दिखे नाही...? ये सवाल मुझे आज भी पढते है । और इन सवालों के जवाब मुझे आज तक पता नाही । हा

तो हम दोनों हररोज बात करने लगे, मेरा दिल उसपर पहले ही आया था , पर आगे जखमी दिल होकर 2-3 महिनो बाद इस निठलले दिल को उसपर प्यार होने लगा । हां पर बाकियो जैसा प्यार है वो उसे सिदा जा के बता दू इतना में बहादूर भी नाही था और मुझे उसका भरोसा तोडना नही था ।जितना था उतने में ही खुश रहने में भलाई थी क्योंकि अगर मे उसे कुछ बता देता तो वो मुझे गलत ले लेती और सबसे अहम बात तो मेरे उपर से उसका भरोसा उठ जाता । हां पर सब पहले से ही सच था ।

SOCIAL MEDIA ये एक ऐसी जगह है जहा अक्सर हम बोहत से लोगो को दिखते-देखते है ,बोहत सी लोगो से बात

करते हैं । वहा बोहत से लोग हमे पसंद आते भी हैं। पर मुझे न जाणे क्यो पर आरोही ऐसे दिखनी लगे जैसे किसी रोड पे लिखा हो “ONE WAY ROAD ONLY” । अगर वो कोई OPTION होती तो मैंने उसे पेहले ही मेरे दिल की बात बता देना था बिना कोई दोस्ती को मायने रखते । मैं डरता था उसे खोने के डर से, और मुझे यह पता भी था की बोहत से करीब लोग हैं उसके साथ, मैं रहू या ना रहू कोई फायदा नहीं । असल में सही बताया जाए तो मैं आज भी डरता हू उसे खोने से । मैं ये बात लिखकर जता रहा हू इसका मतलब ये नहीं की मैं डरपोक हू । एक दिल की बात को बस बताना चाहता हू क्योंकि ये सब कागजोपर

लिखा जा सखता है किसिसे बताये ना जा सकता । बताने से आप एक तो खरगोष जैसे डरपोक या तो बेवफा बन जाओगे ।

बादमे हो न हो पर मेरे दिल की बात में ज्यादा देर दिल मे नाही रख सखता था । एक घुटन सी मेहसुस होने लागी थी । किसिके साथ बाटने का दिल कर रहा था । पर बाटना भी तो उसिके साथ ही था ।

आपको पढ कर हसी आयेगी पर मेने किया यु था की उसे बता दिया की मेरा एक लडकी पर दिल आ गया है । मैं उसे चाहता हू , और न जाने और कुछ बाते । आरोही को मेने उसका नाम भी गलत बताया था । हम हर रोज उस लडकी के बारेमे बात कर रहे थे, हसी मजाक के

साथ वो भी सब सून लिया करती थी । अब मेरा दिल हलका होने लगा था । किसिके साथ कोई चीज बाटने से दिल बोहत हलका हो जाता है । अफसोस इस बात का था की जीस लडकी का जिकर मैं उसके पस करता था, वो लडकी और कोई नाही बलकी वो खुद है ये बता ना सकता था । पर ये प्रवचन बस 8 से 10 दिन तक चल गया । बाद में हुआ यु की एक इततेफाक बोल सकते है पर आरोही ने उस लडकी के बारे मे मुझे अखिर सब कुछ पुछ ही लिया । उसे शक था की वो लडकी जिसके बारे मे, मैं सब कुछ बता रहा था वो लडकी वो खुद है । पर उसका शक झुट भी तो नही था और दुसरी तरफ मैं उसे झुट बता भी नही सखता था

। मेने भी थोडा दिल पर पत्थर रखकार सब सच बता दिया । हां में उस समय उसे कुछ और बताकर बात को टाल सखता था ,मगर बात टालकर झुट बोलने से तो अच्छा था मैं उसे सब खुलकर सच बोल दु । और मैंने यही किया । हां समय गलत था ,पर बताया हुआ सबकुछ सही था ।अब आरोही को कितना सच-कितना झुट लगा इसका मुझे अंदाजा नही था । ये सब हो जाने के बाद आगे से जवाब आया “ तुम जो सोचते हो वैसा मैं तुम्हारे बारे में नही सोचती, सो तुम भी यह बात दिमाग से निकाल दो ।” । ये जवाब तो जायज था ,मुझे पेहले से अंदाजा था । तभी पता चला था की दिल ना साला दायनी और होता है ना बायनी और ,बीच

में होता है । कयोकी मुझे वही दरद हो राहा था । पर ज्यादा दुःख नहीं हुआ ,मुझे पेहले से उसके जवाब का अंदाजा था ।

सच तो मे उसे बोहत महिने या सालों तक कुछ बताता नहीं । मुझे उसे खोने का सबसे ज्यादा डर था ,और रही बात दोस्ती की तो मेरे प्यार के बदले मुझे प्यार नहीं मिला सो दोस्ती छोड दू इस किसम का इनसान भी नहीं हू । पर नसिब उस वक्त कुछ ज्यादा ही बडे छक्के लगा रहा था । दरअसल आरोही उसकी जगह सही थी , हम दोनो एक दुसरे के ज्यादा जनने में नहीं थे ,3 मेहने बाद ये रामायण होने पर हर किसिका जवाब वो ही होता जो आरोही का था ।ये सब हो जाने के

बाद मेने फैसला कर दिया था आगे से इस विषय को पूर्णविराम लगाते हुए आगे बढ़ेगे ,कोई पुराणे काल का जिकर आगे बढकर नही होगा । अभी तो दिल का तुटना और उसका मर जाना अभी बाकी था । कहाणी यहा खतम नही हुई उसे और आगे बढना अभी बाकी था ।अभी मेरा और जवान होना बाकी था....।

सच कहू किसिके जाने से कुछ फरक नही पडता मुझे, हां बुरा जरूर मेहसुस करता हू मैं और मेहसुस करना जायज भी है ,बस फरक नही पडता मुझे, बस अपनी जिंदगी जी लेता हू मैं । और अकेले जिने में तो महारत हसील है मुझे । पर आरोही के जाने या ना जाने से मुझे फरक जरूर पडता है । आरोही

का मुझसे बात करने से ना करने से बलकी हर
एक छोटी चीज से मुझे फरक तो पडता है ।
अफसोस.....!

अब रेलगाडी ट्रॅक बदले आगे बढ
रही थी । बादमे ना मेने कभी अपने दिल की
बात किसीको बताई और ना ही कभी उस पुरानी
चीज का नगारा नही बजाते रहा । बात खतम
हुई, मगर मेरे दिल में और दिमाग में उसकी
जगह मिटने का नाम नही ले रही थी । हां बस
कुछ उसे बोल नही सकता था ,मतलब कोई
फायदा ही नही था । 3 मेहने बाद भी हम वैसे
ही बात कर रहे थे जैसे पेहले करते थे । मेने
अजतक कभी प्यार के लिये दोस्ती नही छोडी
,हां दोस्ती के बाद ही प्यार होता है, “सामने

वाले का प्यार ठुकराने पर दोस्ती कम करना “
ये कई लडको क लॉजिक है पर ये लॉजिक मुझे
आजतक समझ नहीं आया । प्यार है तो दोस्ती
होने पर भी तो खयाल रखा जा सकता है, उसके
लिये कोई सामने वाले के दिल में भी प्यार नाम
का पाठ होना, ऐसा खयाल ही गलत है । बस
दुःख तो होता है । दुःख होता है की हम जो
एक तर्फा सपना देख रहे थे वो सच होगा भी या
नहीं । एक उम्मीद कायम लगाए बैठे रहते हैं ।

अब हम पेहले जैसे बात कर रहे
थे । हम दोनो ने ना ही कभी एक दुसरे को
देखा था और ना ही आमने सामने बात हुई ।
बस इस आधुनिक काल में social media के
जरिये बातें हो रही थी । एक दिन हुआ यु की ,

मैं बहर रास्ते पर घुम रहा था तभी ही अचानक से मुझे वो सामने दिखाई दी । उस वक्त मे थोडा हडबडा उठा और मेने उसे देखते ही मेरी पलक उसपर से हाटाई । असल मे आरोही से मिलकर मैं बात तो करना चाहता था, मगर दिल में एक घाबराहट सी मेहसुस हो रही थी । पेहली बार उसे उस दिन कुछ पल देख लिया था , क्या कहू.....शब्द नहीं है....मानो परियों की जहाँ से हो, खूबसुरात तो वो है यारा बोहत खूबसुरात है । पर कभी उसके खूबसुरती पर मेरा दिल नहीं आया ,वैसे तो अखोंको बोहोत सी लाडकीया खूबसुरात दिखती है मगर आरोही में कुछ अलग बात थी ,मेने शुरु में ही बताया था की उसे देखणे के बाद “उस रोज, उस पल, उस

क्षण ऐसा लगा था की हमारी नगर की सारी भांग हमारे माथे में और बाप्पा का सारा जहर हमारे अखों में उतार आया हो ।“ ये हमारे नगर का पहला तोहफा था हमे ।

तो उस समय आरोही ने भी मुझे देखा पर हम दोनो ने एक दुसरे को नजर अंदाज किया था । दोनो के मन मे एक ही डर था की हम दोनो एक दुसरे को पहचान रहे है तो भी अंजाना मेहसुस कर देगे । अब आरोही का तो नही पता मगर मुझे तो उस बात का डर था । और मे उस लडकी से मिलने से या सामने बात करने से डरता था जिससे में प्यार करता हू । पर मिलना भी तो जरुरी है ,अभी ना सही पर कभी तो मिलना ,उसके साथ बाते करना जरुरी

तो है । पर हां ये सब चिजे हो जने के लिए कुछ और समय बीत जाना ही था । हमारा मिलना, बात करना अभी बाकी था ।

उसे देखणे का तो बोहत मन करता था , पर देखू भी तो कैसे , कुछ तरकीब सुझ नही रही थी । सो उसके घर से कई 10 मिनिट के दुरी पर एक भगवान राम का मंदिर है । मैं वहा हर रोज जाता रहा ,हां आज तक जाता हू...! पेहले कभी मंदिर नही जाता था लेकिन पिछले 1 साल और कुछ 2-3 मेहनो से आज तक हर रोज उस मंदिर में जाता हू । पर पेहले तो बस आरोही वहा मुझे दिख जाए इस खयाल से जाता था ,पर अब नही ,अब आदत पड गई है । अब तो बस उस भगवान से

मिलने और उनसे प्रार्थना करणे जाता हू । तो हम 1 साल पेहले का बात कर रहे थे , सो उस समय एक बस इस खयाल से जाता था की आरोही दिख जाए । “छिपकर आरोही को देखकर निकल जाऊंगा” , हर रोज वहा उस मंदिर जा के ये ही भीक मांगते रहता था । पर भगवान हमारी काहा सुने.....,नही दिखी आरोही । ना ही कभी उसका दर्शन हुआ । फीर में सिर लटकाए उन ही गल्लीयो से हर रोज गुजरता रहा ।

फिर कुछ 6 मेहनो बाद हम दोनो की दोस्ती और अच्छी बन गायी और हम दोनो एक दुसरे को हर अच्छी बुरी चिजे बाटते रहे । पर मेरे सिने में उसके लिये प्यार की चिंगरी अभी तो जल रही थी । तभि एक

रात अचानक , यातायात कह सखते है इसे
मगर आरोही ने मुझे फिरसे एक बार पुछा “क्या
तुम्हारे दिल में अभी भी मेरे लिये feelings है
?” अब ये तो एक नो बॉल फ्री हिट वाला पल
था । मन चाहे खेल सकता था । उस वक्त कोई
और होता तो खुश होकर बेहकावे में सब सच
बता देता । पर मैं नहीं, मैंने पेहले ही तय कर
लिया था उस विषय पर बात नहीं करेंगे ।और
मैंने फिर उस सवाल का जवाब “ नहीं “ दिया
,फिलहाल दिल में तो जवाब “ हा “ था ।

क्योकी सच बोलने से कोई फायदा ही नहीं था ,
पता था मुझे.....फिरसे मुझे गाडी घुमा फिराकर
उस ही गड्ढे में नहीं डालनी थी । सो झुट
बोलना पडा । और अगर मैं सच बोल भी देता

तो उसे लगता प्यार है इस स्वार्थ के करण
अजतक बात कर रहा हूँ । कुछ झुट सामने वाले
को दुःख ना मिले इस लिये बोलना पडता है ।
और फिर वो ही रेलगाडी इस स्टेशन से भी
आगे निकल पडी । वक्त आगे बढ रहा था ।

जैसे ही वक्त आगे बीत
रहा था ,वैसे ही बित ते वक्त के साथ हमारी
दोस्ती और करिबी बढ रही थी । एक दिन ऐसा
नही बीत रहा था जीस दिन बात ना हो ,वैसे
आज भी वो ही हाल है । कभी कभी किसी
कारण एक-दो दिन बात नही हो पाती या फिर
झगडा हो जाता तो कभी वो खुद आकर बात
करती या फिर मैं तो बात करता । आज भी ये
ही हाल है । अब तो मुझे लग रहा था उसे भी

कुछ कुछ होने लगा है । अब 10 मेहने बीत गये थे और मिलना तो हम दोनों को था । मुझे तो मिलने से ज्यादा बस उसे देखणे का दिल करता था । आरोही को बस देखणे के लिये मैं हर रोज मंदिर जाने लगा था ,उस रास्ते से गुजर ने पर मेरी आंखे उसे ढुंडती थी । पर वो कभी दिखाई दी नहीं । पर हो ना हो पर एक मंदिर जाने की अच्छी आदत मुझे पड गयी है । हर रोज की बातों में एक अपना पण था ,एक दुसरे का खयाल था ।

एक बात याद आयी , मुझे शायरी और कविताये लिखने का बडा शॉक था । मैं प्यार पर कविताये शयरिया लिखता था, हां अब आप सोच रहे हो वो सही हैमैं आरोही पर

और उसके लिये ही लिखता था । वो पडती थी
उन्हे और उसे बेहद पसंद भी आती थी मगर
मैंने उसे ये नहीं बताया था की वो उसपर रचाई
गई है । उसे पसंद आती है ,इसमे ही मेरे दिल
को सुकून मिलता था और मैं आगे और लेखता
था । ये शायरी ,कविता का खेल दरअसल उसे
पेहली बार देखणे के बाद ही चालू हुआ था मगर
इस चीज का जिकर आज मैं अपनी कहाणी मे
कर रहा हू । शायरिया, शायरिया , बोहोत सारी
शायरिया पर मेरी जिंदगी ही अब बोहोत बडी
शायरी बन चुकी है ।

अब एक साल पुरे हो गए थे
, और हम तो अब पक्के दोस्त बन चुके थे ।
हम दोनो के पास एक दुसरे का फोन नंबर तो

था पर कभी बात नहीं हुई ,और ना ही कभी मेने आरोही की आवाज सुनी । पर इस अंजान लडकी से प्यार इतना था की उसके याद आये बिना एक दिन नहीं कटता था । याद का सवाल पैदा ही नहीं होता क्योकी हम हर रोज बात करते थे । पर कभी कुछ पल हमारी बात ना हो पाती तो मेरे दिमाग में बोहोत सवाल शोर मचाते थे “ वो ठीक तो होगी ना ? , वो किसी मुसीबत में तो नहीं ? , अभितक वो ऑनलाईन क्यू नहीं अयी ? “ और न जाने और बोहत सारे सवाल । हां अब आप इसे overthinking केह सकते है ,क्योकी आरोही भी उसे overthinking ही केहती थी । असलं मे ये मेरा एक दुर्बलता का करण आप केह सकते है , मगर ये दुर्बलता

सिर्फ उस वक्त ही होती है । आरोही उसे overthinking का नाम दे देती मगर काश वो उसके पिछे की वजह ,खयाल समझ पाती । बस अफसोस इस बात का है । और अगर मेरा दिल आजाये किसीपर तो सामनेवाला मेरे साथ कैसे बरताव करता है , इस पर मेरा मूड तय होता है । मैं हर चीझ बारिकी से मेहसुस करता हू, हर छोटी से छोटी चीझ । हा ये overthinking है मगर इसमे एक खयाल रखने का भाव है ।

खैर हम इस बात को पूर्णविराम लगाते हुए ,हमारी रेलगाडी वापस अपनी ट्रॅक की ओर ले आते है ।

तो थंडी के दिन थे और सुबह लोग अकसर सुबह उठकर पैदल चलने

किसी फूटपाथ जाते हैं । सेहत के लिये अच्छा माना जाता है । आरोगी भी दो सहेलियों के साथ वहा जाती थी । तो मेरे दिमाग में खयाल आया उसे देखने का ये सही अवसर है । सो मैं भी हर रोज वहा जाने लगा । तो एक अलग ही नजारा मुझे दिखाई दिया की कई बड़े- बुढ़े लोग वहा चलने या कसरत करने आते थे । पर जवान लडके- लडकीया मूह पर पावडर थपकाये वहा एक दुसरे को देखने आते हैं । ये तो सब उलटा खेल था की बुढ़े लोग कसरत करे और जवान लडके- लडकिया एक दुसरे को तखते रहे । ये कुछ अलग ही माजरा था । मैं भी वहा जाता था पर लडकीया देखने नही तो बस जाने अंजाने से अग आरोगी दिख जाए तो दिन खुश

हाल बीत जाए । 4 दिन में हर रोज जाता था मगर नहीं दिखाई दी । आरोह और प्रतीक को मेरे दिमाग में चल रहे रॉकेट का अंदाजा नहीं था । वो दोनों मेरे दोस्त हैं , वो मेरे साथ आते थे । आरोही और मैं रात को इस बात पर ही बेहस करते थे की रोज एक जगह घुम जाने पर भी हम दोनों एक दुसरे को मिलते नहीं । आगे 5 वे दिन वो दिन आगया की सामने से वो उसके दो सहेलियों के साथ आगे बढ रही थी ,मगर हुआ यु की मेने उसे बोहत दूर से ही देख लिया था पर जैसे एक दुसरे के नजदीक आने लगे मेने उसकी तरफ देखा तक नहीं । वो राह देखती रही की मैं उसे देखू , उससे बात करू पर मैं आगे चल पडा , काश एक बार पिछे मुडकर

तो देखा होता । मेने उस वक्त उसे दुखाया था । मुझे आरोही ने पुछा भी था की “तुमने मुझे देखे नजर अंदाज किया था ना ?” । पर मेने उसे फिर एक झुट बोल दिया “ नही देखा । पता नही ऐसा क्यू हुआ मगर दिल बोहोत घबरा गया था और अखे उठकर उसे देखणा तो चाहती थी मगर ऐसा कुछ हुआ नही ।

पुरे एक साल और कुछ मेहनो बाद 26 डिसेंबर 2020 को हमने पेहली बार एक दुसरे के साथ फोन पर करीब 15 मिनिट तक बात की । उस दिन की खुशी में अपने शब्दो में बया नही कर सकता । वो अपनी हर खुशी - नाराजगी की बात मेरे साथ बाटा करती थी । मुझे भी अच्छा लगता था ।

अकसर हम रात में ज्यादा बातें किया करते थे । एक दिन आज तक ऐसा नहीं गुजरा जब मुझे उस से पहले निंद आए । एक बार हुआ यु था की ,मैं रात के 12 से कुछ 6 मिनट पहले सो गया और वो 12 बजे online आए उसने मैसेज किया ।उसे मेने दुसरे दिन देखा । इस हादसे बाद वो 12 से पहले सोए या ना सोए मैं आज भी रात की 12 बजे तक उसका इंतजार करता हूँ । एक हादसा मैं बाटना चाहूंगा ,हुआ यु था की ,एक एक दिन मुझे निंद आ रही थी और मेने आरोही से बोला। “ तूम कब सो जाओ गी सो मैं भी जल्दी सो जाऊँ “ उसपर वो बोली “ तुम क्या मेरे लिये इतनी देर जाग रहे थे ।“ इसपर मैंने कहा “ नहीं मैं क्यूँ तुम्हारे कारण

जागू “ उसने कहा- “ हां ये तो सही है “। इस वक्त एक दिल पर घाव हुआ , घाव इस बात का था की इतने दिन बात करणे के बाद भी वो मुझे समझ नहीं सखी। खैर... मैं ही कुछ ज्यादा सोचता हूँ । और इंतजार के बारेमे मैं आपको बता दु तो मेने अपने जिंदगी में 10वीं के board पेपर के निकाल का भी इतना इंतजार नहीं किया था जितना आरोही का रात के 12 बजे तक करता हूँ । अफसोस ये है की ये सब वो समझ नहीं सकती ।

और दिन बीत गए और वो मुझे कई बार रास्ते पर घुमते वक्त दिखाई देती थी । मैं भी उसे छीपकर देखता था । वो भी मुझे देखना चाहती तो थी पर मैं उसके

सामने कभी ना जाता । 1-2 बार उसने कहा भी था - “ मैं तुम्हारी राह देख रही थी ,की तुम मुझे दिख जाओ मगर तुम मुझे देखते ही भाग जाते हो “ । अब उसे दिल का हाल क्या बताऊ । काश वो खुदसे समझ सकती । इस हादसे बाद मेने उसे मिलने का आखिर तय कर लिया । और आखीर 4 फेरवरी 2021 ,पुरे देड साल बाद वो दिन आगाया जब एक सीन हुआ “RIYANSH MEETS AROHI “ । दोपेहेर कुछ 4:30 बजे उसे मैं मिलने उसके कॉलेज गया था । 20 किलोमीटर दूर ,भर दोपहर ,बिना ड्रीविंग लयसन्स ,बीच में 10-12 पोलीस मामु को टक्कर दे जाना वो भी एक लडकी से मिलने के लिये , एक पागल ही ऐसी हरकत कर समता

था। और हां मे आरोही को लेकर कुछ ज्यादा ही पागल हू। उसे पेहली बार उस बस स्टॉप पर मिला था । पेहली बार मिलते ही वहा एक गणेश भगवान का बडा मंदिर है वहा अकसर मेरा आना जाना बना रहता है , उस मंदिर में उसे ले गया था । अब इसके पिछे भी एक वजह थे,वो ये थी की मैं जब अकेले उस मंदिर मे जाता था तो उनसे हमेशा एक भीक मांगता था की “ आरोही को खुश , बुरा साया उसपर और किसीपर मत आने देना , सो पेहले बार मिलेगे तो मैं उसे पेहले आपके पास उसे आपके दर्शन लेने लाउगा ”।ये एक बचपणा सा था मगर दिल की बात भगवान तो सच जनता ही है ,सो बोल दिया । और जैसे मैंने बताया वैसे मैं उसे पेहली

बार वहा ले गया ,हम दोनो ने वहा दर्शन लिया
 , भूक लगी थी सो कुछ खाया और खाकर हम
दोनो साथ में घर गए । मेरे घर जाने पर मैं तो
रात तक एक सदमे में था । और मेरा दिल
मान ने को तयार नाही था की हम आखीर मिल
चुके है । एक सपना सा था ।

वैसे हम दोनो अबतक चार
बार मिल चुके है । उसे गुलाबजाम बडे पसंद है
। हम दुसरी बार मिले तब मेने उसे वो दिये भी
थे । पर इसके पिछे कोई वजह नही थी ,मेरे
दिल ने वैसे करने से कहा सो कर डाला । आप
अगर ये सोच रहे होंगे की आरोही पर मेरा प्यार
है इस लिये मैं उसे मिल रहा हू तो ये सरासर
गलत बात है । उसपर मेरा प्यार है यह एक

जखमी दिल का दुःख है । और मैं दुःख कभी किसीको बताता नहीं , वैसा करके कोई फायदा ही नहीं ।

पर मेरे दिल में प्यार
अभि भी बाकी था । देड साल तक उसे बस ये ही लगा की मैं उसे बस उसे अपना अच्छा दोस्त समझता हूँ । पर उसे मेरे दिल में जो प्यार था इसका एहसास नहीं हुआ । काश होता.....। एक बार हुआ यु की रात को बात करते समय वो मुझे बोली “तुम मुझे बोहोत पसंद हो “। अब अगर ये किसी और के साथ होता तो वो गार्डन दुनिया में बस चुका होता । पर मुझे अंदाजा था की पसंद होना मतलब प्यार होना नहीं , दोनो अलग रेल्वे ट्रैक है । हां 5 मिनिट के लिये तो मे

भी गार्डन दुनिया सवार हो चुका था । मेरे दिल में उसके लिये अब भी प्यार हैये बात एक दिलपर बोझ सा बन गया था । किसिके साथ सब बाटना चाहता था । एक दोस्त थी जिसे मैं ये सब बाटा करता था ।मगर अब नहीं करता क्योकी कई लोग दुःख बाटने से उसे कम करने की बजाय अपने हादसे बताकर उसे बढाते है । कोई सून ने को और समझ ने वाला नहीं होता । अब दिल में एक घुटन सी मेहसुस हो रही थी । दिल में आरोही के लिए प्यार होते हुए मैं किसिके पास मेरे दिल की बात बता नहीं सकता था बस इस चिज का सबसे ज्यादा दर्द मुझे हो रहा था। अब मैं अकेला पड गया था। हररोज करिबी दोसतो के बीच रहते हुए भी दिल हमेशा

दुःखी आत्मा की तरह घायल रहता था । आरोह
ये सब बाते जनता था ,पर वो मुझे ही सवार
रहा था ,वो भी तो क्या करता । एक दिन ऐसा
नही गुजरता था जीस दिन आरोही का दिल में
खयाल ना आता हो , वो कैसे होगी ? , ठीक
तो होगी ना ? ये सब सवाल दिमाग में नाच
रहे थे । Overthink का बोला जए तो वो बस
उसके लिये ही होता था ,वरना बाकीयों के लिये
में think भी नहीं करता ,तो overthink दूर की
बात है । असलं में वो कभी Overthink नहीं था
,वो प्यार था जो उसे अजतक समझ नहीं
आया। और उस प्यार को Overthink का नाम
दे चुकी थी । वो कभी मेरे बारेमें सोचती तक
नहीं थी । और मैं उससे दिल लगए दूर तक

आस लगाए बैठा था । वो आरोही के घर के नजतिकी मंदिर में बैठे हुए भगवान भी मेरा रोज का गाना सूनकर थक गए थे । पर अब मैं उस मंदिर में कोई चीज मांगणे नहीं जाता हू । एक अच्छी आदत लग गई है और मैं पेहले भी कोई स्वार्थ या मुझे कोई चीज मांगणे नहीं जाता था । कभी कभी उन्हे भी उनका हालचाल पुछना अच्छी बात है ।

अब मेरी कहाणी की रेलगाडी अंतिम स्टेशन पर पोहचने में कुछ समय बचा है । मेरी बोहत सी बुरी आदत है । उनमें से एक ये है की , जब मुझे किसी बात का घुस्सा आता है तब मैं सब दिल में जो चल रहा है वो सामने वाले को बोल देता हू । उस बात से फिर उसे

कैसा लग सकता है उस बात का खयाल मुझे नहीं रहता । तो एक दिन किसी छोटे से झगड़े के कारण मे थोडा घुस्से में थ । उस ही समय आरोही पर मैंने अपना सारा घुस्सा निकाल दिया और जो ना होना चाहीये था वो हो गया ।

आरोही के लिए मुझे जो कुछ अभी भी लागता है वो सब उसे बता दिया । देड साल , देड साल बाद फिरसे रेलगाडी जीस स्टेशन से निकली थी उस ही स्टेशन पर फिरसे आगई थी । मेरी यह बात उसे शॉक दे बेटी थी । वो बोली “ क्या हम दोनो मिलते है एक दुसरे से इसलीये तुझे मेरे बरेमे फिरसे प्यार आने लगा है ?” । मैं गुंगे की भाती चूप था । जाहीर सी बात है उसने मुझे फिरसे नकारात्मक का रूप देना तय था ।

उसका केहना था की अभी बीच में ही मुझे ये सब कैसे सुच रहा था और वो बोली “ मेरा आरोही पर दिल आता है इसका क्या मतलब ?” । अब क्या बताऊ उसे,कुछ बता भी तो नही सकता था और बता भी देता तो उसे झुट लगता । असल में तो इस सवाल का जवाब ये था की “ मैं उसे पेहली नजर में देखे ही प्यार कर बैठा था , फिर भी दिल को 2 मिनिट सोचने का वक्त दिया , दिल से वही जवाब आया “ । पर ये सब उसे केहता भी तो कैसे , सो ना बोल पाया कुछ । पिछली देड साल से मेरा उसपे प्यार था ये बात उसे झुट लग रही थी । आरोही का अंतिम जवाब था की “ मुझे आज भी तुम्हारे लिये कुछ नही लगता , मैं बस तुम्हे

अपना दोस्त समझती हूँ, और मेरा किसी और पर प्यार है “। आरोही भी मेरी तरह शायरी ,कविताये लिखती है पर अफसोस किसी और के लिए । ये सब होणे के बाद भी मेरा एक ही जवाब था की “ ठीक है ! ये देखो मेरा तुमपर पेहले भी प्यार था और आगे भी रहेगा , पर आगे में प्यार और दोस्ती के बीच की दिवार नहीं बन ना चाहता , बस मुझे तुमहें खो देना नहीं है , तुम आज भी मेरे लिये उतनी ही खास हो जितने के पेहले और आगे में ये विषय के बारेमें कभी बात तक नहीं करूंगा ।“ हां उस दिन भी मैं उसे ये सब नहीं बताता मगर मेरे घुस्से ने कुछ ज्यादा ही शोर मचा दिया था । मेरे अंदर में घुमती हुई सारी तितलीय अब

बिखर कर मर चुकी थी ।हां आज भी मेरे दिल
में उसके लिये प्यार है और आगे भी रहेगा
मगर कोई आशा नहीं । अब दिल का मर जाना
ही ठीक है । आज भी हम पेहले जैसे बात करते
हैं । दोस्ती ही सही मगर वो आज भी मेरे
जिंदगी में है ,ये एक बड़ी बात है । पर पेहले
बात करने में और अब बात करने में थोड़ा
फरक तो है । अब आरोही का मुझपर से थोड़ा
भरोसा तो उड चुका है । अब वर्तमान की ही
बात की जाए तो देखो ना हार रोज बात करने
वाले दो शक्स 3 दिन हो गए एक दुसरे से एक
शब्द भी नहीं बोल रहे । आगे हमारी बात होगी
या ना होगी मुझे कुछ नहीं पता । पर मैं उसकी
राह हर पल ,हर मिनिट कर रहा हू ।पेहले वो

छोटी सी चीज पर रूठ जाती तो मैं उसे मनाया करता था ,पर अब साला दिल भी थक गया है । क्या उसे आजतक पता नहीं की उसकी बगैर मेरा किसी काम में दिल नहीं लगता । उसे पता है मगर वो भी तो मुझसे बात करने से थक गयी है । उसमे वो तो क्या करे , सो मैंने भी अब उसे तंग करना छोड देना चाहीये । सच्ची मोहोब्बत का जहाज हमेशा डूबता है । आरोही ने उस दिन आखरी बार बोला था " मेरा ये केहने से तुमहें दुःख हुआ सो तुम्हारे लिये मुझे guilty feel हो रहा है, तुमने मुझे ये सब पेहले क्यू नहीं बताया ?" असलं मैं ये सब मे केहना तो चाहता था ,लेकिन आरोही बेहोष थी और मुझे पता भी नहीं था की वो कब उठेगी । मुझे तो

लगा था वो कभी उठेगी ही नहीं । पता है मेरी सबसे खास बात क्या है , मैं अकेला हूँ और मुझे दिल लगाने के लिए बस आरोही मिली ,पर आरोही वैसे नहीं है, उसे दिल लगाने वाले बोहोत से लडके हैं । वो अभितक मुझे भूल तक चुकी होगी । सबसे खूबसुरात यादों में से एक जो मैंने अपने आँखों से देखा था वो एक आखरी याद बन चुका है । आरोही मुझसे प्यार करती है ,ये बात एक आखरी याद बन चुका है । तो ये sympathy, guilty, सहानुभूती इन सब चीजों को मैं नहीं मानता , जब आरोही के दिल में मेरे लिये पहली जैसी दोस्ती और दोस्ती वाला प्यार हो ,तब मुझे आकर मिल जाए । ठीक है ! अब रेलगाड़ी अंतिम स्टेशन पर पोहोच चुकी है ।

मेरी ये कहाणी लेखणे के पिछे की वजह ये थी की मैं अकेला पड गया था । एक लिखने से तो सही मैंने अपने दिल की बात कागजोपर उतार दी । ये कहाणी असाल में इतने जल्दी खतम होती नही पर कुछ शब्दों में इसे लिखना चाहता था । सो वो कर दिया । एक मजे की बात ये है की ये कहाणी आरोही पढ रही है । पर उसे कुछ समझ आ रहा है या नही, या ये सब झुट लग रहा है ,मैं नही जाणता ।

बस इतनी थी मेरी कहाणी । एक लडकी थी जो आज मेरे साथ बात नही कर रही है । या कुछ दोस्त थे जो सोच रहे थे की ये दुःखी आत्मा फिरसे खिल उठे ,कई दोस्त थे जो पेहले मुझसे बात कर रहे थे मगर अब

मेरी हरकत की वजह से वो बात नहीं करते ,
एक और लडकी थी जीसने एक समय के लिये
पुरा हार दिया था मुझपे , मेरी माँ थी , बाप था
, मेरी नगर की गलिया थी और ये एक मेरा
दिल था जो मुझे छोड चुका था । मेरा दिल उठ
सकता था ,पर किसके लिये , चिख सकता था
,पर किसके लिये । मेरा प्यार आरोही , दोस्त ,
आरोह सब मुझसे छूट रहे थे , पर रख भी
किसके लिए लेते थे । मेरे सिने की आग या तो
मेरे दिल तो जगा सकती थी ,और या तो मार
सकती थी ।

पर अब साला उठे कोण,कोण फिरसे
मेहनत करे दिल लगाने को , दिल तुडवाने को
।

अबे कोई तो आवाज देकर
उठाओ ।

ये लडकी जो मेरा दिल
तुडवाकर बैठी है,आज भी अगर बोल दे तो
बाप्पा की कसम वापस आ जाऊ । पर अब
साला mood नहीं । दिल के मर जाने में ही
सुख है । सो जाने में ही भलाई है ।

पर दिल में भरी तितलीया
उठेंगे किसी रोज, उस ही नगर की गल्लीयो में
दोड जाने को ,किसी आरोही के इश्क में फिरसे
पड जाने को ।